पूज्य बाबासाईं : संक्षिप्त जीवन-परिचय

शिव शांति आश्रम, लखनऊ के पीठाधीश्वर पूज्य बाबासाईं चाँडूराम साहिब सिंध में स्थित पूज्य रहिड़की दरबार की परंपरा के वाहक रहे। संतों के संत साईं खोताराम साहिब रहिड़की दरबार के संस्थापक थे, जिन्होंने अनोखी सिंधी भगत परंपरा को जन्म दिया। सिंधी भगत का अर्थ है, जो प्रवचन-गायन-नृत्य इन तीनों विधाओं का एकसाथ प्रदर्शन करते हुए आध्यात्मिक अलख जगाये। उपस्थित जन-समुदाय के सामने भगत अपनी झोली फ़ैलाकर उन्हे दान देने के लिए प्रेरित करते हैं, फिर दान में मिली आख़िरी पाई को भी ज़रूरतमंदों में बाँट देते हैं और अपने परिवार का पोषण अपनी मेहनत की कमाई से करते हैं। साईं खोताराम साहिब ने भगत की यह महान विरासत गुरु-शिष्य परंपरा अनुरूप, सच्चे साईं के नाम से प्रसिध्द अपने सुपुत्र साईं सतरामदास साहिब को सौंपी, जो आगे चलकर अमर शहीद संत कँवरराम साहिब, फिर सख़ी बाबा आसूदाराम साहिब से होती हुई अब बाबासाईं चाँडूराम साहिब तक पहुँची, जिसका पूज्य बाबासाईं ने पूरी निष्ठा के साथ वहन किया। इसके अलावा सिंध की इस अनोखी जाग्रत संत परंपरा के संत वैरंगिक होते हैं, अर्थात गृहस्थ रहते हुए व्यापार करते हैं और साथ में उदासी रहकर आध्यात्मिक अलख जगाते हैं। इस अनूठी सिंधी परंपरा के सिरमोर रहे भगत कँवरराम साहिब, जो प्रवचन-गायन-नृत्य इन तीनों कलाओं में कुशल थे। भगत साहिब ने अपने जीवन में धन-कुबेर से भी अधिक धन-संपदा दान में पाकर दान कर दी, ताकि ग़रीब कन्याओं के विवाह हो सके, दीन-हीन लोग कर्ज़-मुक्त हो सकें, धर्मशाला/गौशाला जैसे सामाजिक प्रतिष्ठानों का निर्माण हो सके। हर युग को एक ऐसे ही भगत कँवर की आवश्यकता है। पूज्य बाबासाईं भगत साहिब की ही प्रतिमूर्ति माने जाते हैं और आजीवन उन्हीं के पद-चिन्हों का अनुकरण करते रहे।

पूज्य बाबासाईं को सन १९६० में केवल १३ वर्ष की अल्प आयु में ही अपने पिताश्री की विरासत को वहन करने की जिम्मेदारी उठानी पड़ी, जिसे उन्होंने सफलतापूर्वक वहन किया। अपने पिता सख़ी बाबा द्वारा स्थापित सिंध के पन्नो अक़िल दरबार में पूज्य बाबासाईं ने १९६० से १९७९ तक सत्संग-सेवा करते हुए आध्यात्मिक अलख जगाया। पूज्य बाबासाईं के क्रांतिकारी विचारों की गूँज सारे हिंद-सिंध में पहुँचने लगी थी। १५ अक्टुबर १९७६ के दिन भारत यात्रा हेतु बाबासाईं का लखनऊ आगमन हुआ था। इसी यात्रा के दौरान जब लखनऊ के प्रेमियों ने उनसे यहाँ पर आश्रम की स्थापना हेतु निवेदन किया, तब पूज्य बाबासाईं ने इस प्रस्ताव पर अपनी सहमति दे दी, क्योंकि बाबासाईं को यहाँ की आबो-हवा अपनी सेहत के लिए अनुकूल लगी और उत्तर-प्रदेश की राजधानी लखनऊ महानगर उनकी परंपरा के विस्तार के लिए एक बेहतर विकल्प था। प्रेमियों ने आलमबाग़ के नहरिया क्षेत्र में भूमि का अधिग्रहण किया और शिव शांति आश्रम साहिब का निर्माण हुआ। अपने गुरु-पिता एवं इन संतों का ऋण चुकाने के लिए, अपने ईश्वरीय गुणों से जग में अलख जगाने के लिए, सिंध के संतों की महीमा बताने के लिए और अपनी अनोखी शर्तों पर जीवन जीने के उद्देश्य से सन १९७९ में पूज्य बाबासाईं ने सिंध से भारत में आगमन किया। बाबासाईं ने यहाँ आकर कुछ सीखा और बहुत कुछ सिखाया। यह सिलसिला उनकी अंतिम साँस तक ज़ारी रहा। यह एक संयोग ही है, कि अपने लखनऊ में आगमन की तारीख़, जिस यात्रा के दौरान उन्होंने लखनऊ में आश्रम की स्थापना हेतु सहमति दी थी, उसी १५ अक्टूबर के दिन ही, ४९ वर्ष बाद सन २०२५ में बाबासाईं ब्रह्मलीन हुए।

सन १९७९ में लखनऊ का यह नहरिया क्षेत्र शहर से दूर एक सुनसान जगह थी, जहाँ बड़े पैमाने पर ईटों के भट्टे हुआ करते थे। तब एक कुटिया में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की स्थापना तथा सच्चे साईं सतरामदास साहिब, अमर शहीद संत कँवरराम साहिब एवं सख़ी बाबा आसूदाराम साहिब इन तीनों सद्गुरुओं की तस्वीरों के साथ ही बाबासाईं के जीवन का इस नये शहर लखनऊ में एक नया अध्याय शुरू हुआ। सन १९८५ से २०१९

के बीच ३४ वर्ष की कालावधि में लखनऊ से बाहर कुल ५,००० दिनों की सत्संग यात्राएँ करते हुए ५,६०० कार्यक्रमों में हिस्सा लेकर बाबासाईं ने आध्यात्मिक अलख जगाया। नित-नेम सत्संग के साथ ही सेवा-सिमरन एवं सामाजिक नैतिकता बाबत बाबासाईं के अनवरत चलने वाले क्राँतिकारी प्रवचन एवं समाजसेवा के कार्यों की बदौलत शिव शांति आश्रम की ख्याति हिंद-सिंध में दूर-दूर तक पहुँचने लगी। वर्तमान में शिव शांति आश्रम लगभग एक लाख वर्ग-फुट में फैला चार मंज़िला इमारतों से घिरा हुआ एक शानदार परिसर है। लखनऊ का प्रमुखतम वी.आई.पी. (वर्तमान नाम संत बाबा आसूदाराम मार्ग) रोड अब आश्रम से संलग्न है। विश्व का विशालतम भारत-रत्न बाबासाहेब आंबेडकर उद्यान भी इसी क्षेत्र में निर्मित हुआ है। परिणाम स्वरूप शिव शांति आश्रम के साथ ही इस परिसर की भव्यता भी बढ़ने लगी है, जैसे वीरान मरुस्थल में गुलिस्तान खिल उठा हो।

सिंध में स्थित पन्नो अक़िल दरबार-साहिब के बाद, लखनऊ में शिव शांति संत आसूदाराम आश्रम यह सख़ी बाबा का दूसरा आस्थान है। इसके बाद पूज्य माता साहिब बैंसरदेवी का भव्य आस्थान मध्य-प्रदेश के दतिया जिले में निर्मित हुआ। इसके साथ ही पहले से गठित हो चुकी ५० से अधिक संत बाबा आसूदाराम सेवा समितियों द्वारा संत बाबा आसूदाराम सत्संग भवनों के निर्माण का अनवरत सिलसिला शुरू हुआ। अब तक हिंद-सिंध के २५ शहरों में इन सत्संग भवनों का निर्माण हो चुका है। इन समितियों के अलावा संत कँवरराम मिशन, सख़ी बाबा युवा मंडल, संत कँवरराम सेवा मंडल, हर्षा बालिका मंडल, पूज्य अम्मा दयालीदेवी महिला मंडल और अभ्युदय योग केंद्र जैसे अनेक संगठनों को पूज्य बाबासाईं द्वारा स्थापित किया गया। इन संघठनों के माध्यम से जल-अन्न-शिक्षण-स्वास्थ्य-रोज़गार-यज्ञोपवीत जनेऊ संस्कार, आदर्श सिंधी सामुहिक विवाह तथा विशेष रूप से सत्संग-सेवा जैसी अनेक सामाजिक-सेवाएँ संपन्न होती हैं। स्थानीय परस्पर सहयोग के सिध्दांत पर चलते हुए इन समाज-सेवाओं हेतु अब तक दसियों करोड़ रुपये समाज द्वारा समर्पित किए जा चुके हैं।

शिव शांति आश्रम के अंतर्गत पूज्य बाबासाईं के सेवा-संकल्प में केवल १. आध्यात्मिक एवं धार्मिक-सेवा-केंद्र ही नहीं, जिसमें गुरु ग्रंथ साहिब का पठन, नित-नेम सत्संग, संतों के जयंती-निर्वाण महोत्सव, गुरुवाणी का प्रचार, भजन-कीर्तन-प्रवचन तथा ध्यान-दर्शन का समावेश है, बल्कि यह विभिन्न केंद्रों को भी समाहित करता है। जैसे २. सामाजिक-सेवा-केंद्र, जिसमें सामाजिक एकता, स्वच्छता अभियान, नारी कल्याण सेवा, सामुहिक विवाह तथा स्व-रोज़गार हेतु सेवा एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था का समावेश है। इसी तरह ३. सांस्कृतिक-सेवा-केंद्र अंतर्गत यज्ञोपवीत (जनेऊ) संस्कार, संगीत प्रशिक्षण, साहित्य-संस्कृति-संस्कार संग्रहण, सिंधी-गरुमुखी भाषा प्रशिक्षण, नव-वर्ष पूर्व संध्या पर सांस्कृतिक-रजनी का आयोजन भी शामिल हैं। ४. आरोग्य-सेवा-केंद्र स्वरूप यहाँ संत बाबा आसूदाराम धर्मार्थ आरोग्य धाम, संत कँवरराम आरोग्य धाम (माता गंगादेवी प्रसुति-गृह), विभिन्न स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन तथा रक्त-दान शिविरों का भी आयोजन होता है। इसी प्रकार ५. परमार्थ-सेवा-केंद्र के रूप में आश्रम द्वारा निराश्रितों हेतु आश्रय (रैन-बसेरा), वृध्दाश्रम, आपदाग्रस्तों की मदद, संत कँवरराम रैन-बसेरा, निर्धनों हेतु भवन निर्माण तथा निर्धन कन्या-विवाह भी संपन्न होते हैं। इसके अलावा ६. गौ-सेवा-केंद्र के तत्वावधान में आश्रम स्थित गौ-सदन (गौशाला) में गौ-सेवा के साथ ही विभिन्न शहरों में स्थापित गौशालाओं की आर्थिक सहायता होती है। फिर ७. व्यसनमुक्ति-सेवा-केंद्र अंतर्गत आश्रम में नाम-दान नियमों के तहत सभी गुरु भाई-बहनों हेतु माँस-मद-जुआ-हिंसा-चोरी-व्यभिचार को त्यागना आवश्यक है। अंत में ८. ध्यान-योग-सेवा-केंद्र के रूप में योग गुरु बाबा रामदेव प्रणित अभ्युदय योग केंद्र की स्थापना की गई है, जिसमे शिक्षण महर्षि डॉ. जगदीश गांधी जैसे गणमान्य व्यक्ति भी सम्मिलित हुआ करते थे। इस तरह से पूज्य बाबासाईं चाँडूराम साहिब द्वारा प्रणित शिव शांति आश्रम, आठ विभिन्न सेवा-केंद्रों को अपने आप में समाहित करनेवाला, सिंधी समाज का सारे हिंद-सिंध में एक प्रमुख केंद्र है।

सुर-संगीत की समझ, वाद्य-यंत्रों में प्रवीणता और गायन की विशिष्ट शैली पूज्य बाबासाईं के मुकुट में सजे वो मोर-पंख थे, जिनके कारण उन्होंने अपनी एक अलग पहचान कायम की। पूज्य बाबासाईं अपने पिता सख़ी बाबा आसूदाराम साहिब को श्री गुरु नानकदेव महाराज का स्वरूप मानते थे, इसलिए पूज्य बाबासाईं की श्री गुरु ग्रथ साहिब में अटूट श्रध्दा रही। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सारे श्लोक, सुखमणी साहिब और जपुजी साहिब की हर पउड़ी बाबासाईं को कंठस्थ थी। हर श्लोक या पउड़ी की व्याख्या या भावार्थ अपने प्रवचन में घंटों तक करने में बाबासाईं सक्षम थे। उनके हर प्रवचन में निहित गहन भावार्थ को यदि एक शोध-पत्र (थिसिस) के रूप में लिखा जाए, तब इस तरह के हर शोध-पत्र पर डॉक्टरेट (पी.एच.डी.) की मानक उपाधि प्राप्त की जा सकती है। श्रीमद्भगवत गीता और शास्त्रों का पूज्य बाबासाईं ने गहन अध्ययन किया था, जो कि उनके प्रवचनों में साफ़ दिखाई देता है। सख़ी बाबा के दरबारों एवं सत्संग भवनों की दीवारों में बाबासाईं द्वारा प्रदान रूहानी संदेश समाए हुए हैं, जो सदियों तक गूँजते रहेंगे और गूँजता रहेगा पूज्य बाबासाईं का नाम...। पारस पत्थर लोहे को सोना बनाता है, लेकिन बाबासाईं जैसे संत हर व्यक्ति को अपने जैसा बनाते है। बाबासाईं कहते थे, कि हिंद-सिंध के प्रत्येक नगर में उनके द्वारा तराशे गये हीरे भरे पड़े हैं, वक़्त आएगा जब इन हीरों की रोशनी से ये नगर जग-मग होंगे।

पूज्य बाबासाईं चाँडूराम साहिब ९ सितंबर, १९४७ से १५ अक्टूबर, २०२५ तक इस लोक में रहे और ७८ वर्ष की आयु में उन्होंने परलोक गमन किया। इस अल्प जीवन में उन्होंने इतने उपक्रमों को पूरा किया, जिसे ७८ जन्मों में भी पूरा करना सामान्यतः संभव नहीं। बाबासाईं कहते थे. कि उनका जीवन ही उनका संदेश है। बाबासाईं का जीवन-दर्शन ढ़ाई हज़ार पन्नों में भी लिखना संभव नहीं। इस ढ़ाई पन्ने के संक्षिप्त जीवन-परिचय के द्वारा इस महासागर में से केवल ढ़ाई चम्मच ही प्रस्तुत किया जा सका है, इसलिए क्षमा-याचना सहित सादर..।

≤ Ω ∞ Ω ≥